Ck – यीशु एक अशुद्ध आत्मा को बाहर निकालता है मरकुस १:२१-२८
और लूका ४:३१-३७ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु एक अशुद्ध आत्मा को बाहर निकालता है

मरकुस १:२१-२८ और लूका ४:३१-३७

खोदाई: यह कहानी चौधरी से कैसे संबंधित है – प्रभु की आत्मा मुझ पर है? विशेषकर वचन ४:१७-१९? आप क्या समानताएँ और अंतर देखते हैं? यीशु के बारे में किन दो बातों ने लोगों को चकित कर दिया? क्यों? बिना अधिकार के पढ़ाने का क्या मतलब है? येशुआ के अधिकार की प्रकृति और स्रोत क्या था?

चिंतन: आप यहां परमेश्वर के राज्य के बारे में क्या अंतर्दृष्टि देखते हैं? एक से दस के पैमाने पर (दस सर्वोच्च होने पर) आपके जीवन में प्रभु का कितना अधिकार है? दस होने के लिए उसे क्या फेंकना होगा? यीशु के अधिकार के बारे में कौन सी बात आपका ध्यान खींचती है? उसका अधिकार आपके लिए स्वतंत्रता कैसे ला रहा है?

अपने ही गृहनगर नाज़रेथ में अस्वीकार किए जाने के बाद, वह कफरनहूम चले गए। चूँकि नाज़ारेथ समुद्र तल से लगभग १,३०० फीट ऊपर है और कफरनहूम समुद्र तल से लगभग ७०० फीट नीचे है, इसलिए उसे वहां जाने के लिए नीचे जाना पड़ा। इस अवसर पर हम मसीहा को, जैसा कि उसकी प्रथा थी, कफरनहूम में आराधनालय में जाते हुए पाते हैं, जहाँ, जैसा कि हम बाद में जानेंगे, याइरस आराधनालय का नेता था। और जब सब्त का दिन आया, तो यीशु आराधनालय में गया, और लोगों को उपदेश देने लगा। (मरकुस १:२१; लूका ४:३१) यहूदी प्रथा किसी भी योग्य व्यक्ति को तानाख को पढ़ने और व्याख्या करने की अनुमति देना था, भले ही यह आमतौर पर रब्बी के लिए आरक्षित था।

लोग उसकी शिक्षा से आश्चर्यचकित थे। टोरा-शिक्षकों (शास्त्रियों) के पास स्मिखाह नहीं था (उन्हें रब्बियों के रूप में नियुक्त नहीं किया गया था), और इसलिए वे चिद्दुशिम (नई व्याख्याएँ प्रस्तुत करना) या पोसेक हलाखाह (कानूनी निर्णय लेना) नहीं ला सके। यही कारण है कि लोग आश्चर्यचकित थे (कोई कह सकता है कि वे सदमे में थे)। उन्होंने एक रब्बी की तरह पढ़ाया, एक मुंशी की तरह नहीं। वह आश्चर्य का एक स्तर था।

आश्चर्य का दूसरा स्तर यह था कि उसने उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के रूप में पढ़ाया जिसके पास अधिकार था, न कि टोरा-शिक्षकों के रूप में (मरकुस १:२२; लूका ४:३२)। किसी भी रब्बी ने अपने ही रब्बी के हलाखा के विरुद्ध शिक्षा नहीं दी (या न्याय नहीं किया, पासाक)। लेकिन येशुआ, जिसका अपना कोई रब्बी नहीं था, ऐसा प्रतीत होता था कि उसके पास किसी भी रब्बी से अधिक अधिकार था। उनकी शिक्षा स्वर्ग से आने वाली

Ck – यीशु एक अशुद्ध आत्मा को बाहर निकालता है मरकुस १:२१-२८
और लूका ४:३१-३७ | 2

हवा की तरह थी, और, जैसा कि उन्होंने बाद में संक्षेप में बताया, उनका अधिकार सीधे उनके पिता से आया था।

तब यीशु ने चिल्लाकर कहा, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह न केवल मुझ पर विश्वास करता है, परन्तु उस पर भी जिसने मुझे भेजा है। जो व्यक्ति मेरी ओर देखता है वह उसे देख रहा है जिसने मुझे भेजा है। मैं ज्योति बनकर जगत में आया हूं, ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अन्धकार में न रहे। यदि कोई मेरी बातें सुनता है परन्तु उन पर नहीं चलता, तो मैं उस पर दोष नहीं लगाता। क्योंकि मैं जगत का न्याय करने के लिये नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूं। जो मुझे अस्वीकार करता और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता, उसके लिये एक न्यायी है; मेरे द्वारा बोले गए शब्द ही अंतिम दिन उनकी निंदा करेंगे (प्रकाशितवाक्य Fo – महान श्वेत सिंहासन निर्णय पर मेरी टिप्पणी देखें)। क्योंकि मैं ने आप से न कहा, परन्तु पिता ने, जिस ने मुझे भेजा है, आज्ञा दी है, कि जो कुछ मैं ने कहा है, वह सब कहूं। मैं जानता हूं कि उनका आदेश अनन्त जीवन की ओर ले जाता है (देखें Ms – आस्तिक की शाश्वत सुरक्षा)। इसलिए जो कुछ मैं कहता हूं वह वही है जो पिता ने मुझसे कहने को कहा है (यूहन्ना १२:४४-५०)।

वे रब्बीनिक अकादमी में शामिल हुए बिना उनकी शिक्षा की सामग्री और अधिकार से प्रभावित थे। लेकिन जैसे-जैसे उनकी प्रतिष्ठा बढ़ती गई, उनका सवाल था, “उन्हें अपना अधिकार कहाँ से प्राप्त हुआ?” उन्हें अभी तक समझ नहीं आया । उस समय यहूदियों के पास रब्बीनिक अकादमियाँ थीं जहाँ उन्हें एक निश्चित रब्बी द्वारा पढ़ाया जाता था। जब रब्बी स्वयं पढ़ाते थे, तो वे अपने रब्बी को अपने अधिकार के स्रोत के रूप में संदर्भित करते हुए कहते थे, “रब्बी कोहेन कहते हैं।” या रब्बी एडर्सहाइम कहते हैं।” अंततः, हालाँकि, मसीहा प्रकट करेगा कि उसके पास न केवल राक्षसों को बाहर निकालने का अधिकार है, बल्कि पापों को क्षमा करने का भी अधिकार है (देखें Co
– यीशु क्षमा करता है और एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को ठीक करता है)!

हालाँकि लोग उसके अधिकार को पहचानने में धीमे थे, राक्षस नहीं थे। तभी उनके आराधनालय में एक आदमी जिस पर दुष्टात्मा, एक अशुद्ध आत्मा थी, ज़ोर से चिल्लाया, “चले जाओ! नाज़रेथ के यीशु, आप हमसे क्या चाहते हैं? क्या आप हमें बर्बाद करने आएं हैं? मैं जानता हूं कि तुम कौन हो – परमेश्वर के पवित्र व्यक्ति” (मरकुस १:२३-२४; लूका ४:३३-३४)! जब भी यीशु का सामना राक्षसों से होता है तो वे तुरंत उसे पहचान लेते हैं।

परन्तु जब भी कोई राक्षस चिल्लाता कि यीशु कौन है, तो उसने तुरंत उन्हें चुप करा दिया। दुष्टात्माएँ बहुत अच्छे चरित्र वाले गवाह नहीं बनते; इसलिए, मसीह उनसे कोई गवाही स्वीकार नहीं करता। “चुप रहें!” यीशु ने कठोरता से कहा। “उसके पास से बाहर आओ!” राक्षस ने उस आदमी को ज़ोर से हिलाया और उसे नीचे फेंक दिया, इससे पहले कि सभी अशुद्ध आत्माएँ चिल्लाते हुए उसमें से बाहर निकल जाएँ, और डॉक्टर लूका

Ck – यीशु एक अशुद्ध आत्मा को बाहर निकालता है मरकुस १:२१-२८
और लूका ४:३१-३७ | 3

कहते हैं: उसे घायल किए बिना (मरकुस १:२५-२६; लूका ४:३५)। लेकिन जब उन्होंने केवल एक आदेश से उन राक्षसों को बाहर फेंक दिया, तो इससे और अधिक आश्चर्य पैदा हुआ। उन्होंने माना कि उसका तरीका यहूदी भूत-प्रेत भगाने से भिन्न था।

उस दिन राक्षसों को बाहर निकालने का कार्य उस समय विशेष रूप से असामान्य नहीं था। यहाँ तक कि फरीसी और उनके शिष्य भी ऐसा करने में सक्षम थे। यीशु ने बाद में कहा: यदि मैं शैतान को शैतान की सहायता से निकालता हूं, तो तेरे लोग उन्हें किस की सहायता से निकालते हैं (मत्ती १२:२७)? यहूदी लोगों ने पहले ही देख लिया था कि जिस तरह से फरीसियों ने राक्षसों को बाहर निकालने का आदेश दिया था और जिस तरह यीशु ने ऐसा किया था, उसमें अंतर था।

जब रब्बियों ने राक्षसों को बाहर निकाला तो उन्होंने एक विशिष्ट अनुष्ठान का उपयोग किया। अनुष्ठान के तीन चरण थे। सबसे पहले, ओझा को राक्षस के साथ संचार स्थापित करना होगा। जब दानव बोलता था, तो वह जवाब देने के लिए वश में किए गए व्यक्ति की आवाज का उपयोग करता था। दूसरे, राक्षस के साथ संचार स्थापित करने के बाद, रब्बी राक्षस का नाम पूछते थे। तीसरा, एक बार राक्षस का नाम स्थापित करने के बाद, वह राक्षस को बाहर निकालने का आदेश देगा। आम तौर पर ईसा मसीह उन्हें बिना किसी अनुष्ठान के बाहर निकाल देते थे, यही बात उनकी भूत भगाने की क्रिया को इतना अलग बनाती है।

सभी लोग इतने चकित हुए कि एक दूसरे से कहने लगे, “यह क्या है? ये कौन से शब्द हैं. एक नयी शिक्षा! वह अधिकार और शक्ति से अशुद्ध आत्माओं को आदेश देता है और वे उसकी आज्ञा मानकर बाहर निकल आती हैं” (मरकुस १:२८)! कफरनहूम के आराधनालय में हुई इस घटना के कारण उसके बारे में बात तेजी से फैलने लगी। उसके बारे में समाचार तेजी से गलील के पूरे क्षेत्र में फैल गया (मरकुस १:२८; लूका ४:३६-३७)। उन्होंने माना कि वह फरीसी यहूदी धर्म की तुलना में कुछ नया सिखा रहे थे, और इस तथ्य के बावजूद कि यीशु के पास कोई औपचारिक रब्बी प्रशिक्षण नहीं था, उन्होंने अधिकार के साथ पढ़ाया।

सुबह की आराधनालय सेवा के बाद, आज तक यहूदी प्रथा एक विशेष सब्त भोजन करने की है। इस दिन यीशु को पतरस के घर पर सब्त के भोजन के लिए आमंत्रित किया गया था।

उस विशेष शिक्षक में ऐसा कौन सा गुण था जिसने आपको लाइट जलाने में सक्षम बनाया? आप जानते हैं, वह “आह-हा” क्षण जब आप अंततः “प्राप्त” कर लेते हैं। कुछ शिक्षक कुकीज़ को निचली शेल्फ पर रखने में सक्षम होते हैं जहाँ उन तक पहुँचना आसान होता है। शायद आपके पिता के पास था, या आपकी माँ के पास। शायद यह स्कूल में कोई शिक्षक था. परन्तु वह कोई भी था, तुम अपने हृदय में जानते थे कि वह जानता था कि वे किस बारे में बात कर रहे थे। इसे अधिकार कहा जाता है, और हम यहां देख सकते हैं कि येशुआ के पास निश्चित रूप से यह एक अनोखे तरीके से था।

Ck – यीशु एक अशुद्ध आत्मा को बाहर निकालता है मरकुस १:२१-२८
और लूका ४:३१-३७ | 4

कफरनहूम के लोगों के लिए, यीशु अद्भुत थे क्योंकि अपने शब्दों के माध्यम से, वह उन्हें पिता के विचारों के बारे में बता रहे थे। वह केवल मानवीय ज्ञान को एक नए बक्से में दोबारा पैक नहीं कर रहे थे। नहीं – उसके शब्द उन्हें यहोवा का सामना करने में मदद कर रहे थे। क्योंकि वह ईश्वर है, येशुआ पिता के गहनतम विचारों और इच्छाओं को जानता है। उसका अधिकार ऊपर से आया क्योंकि वह स्वयं ऊपर से था। उसके शब्द विश्वसनीय थे, और किसी तरह लोगों को पता चल गया कि वह सच बोल रहा था। लेकिन अगर उनके शब्दों ने उनकी पहचान प्रकट की, तो उनके कार्यों ने भी। यीशु ने दुष्ट शक्तियों पर विजय पाने और अपने लोगों को पूर्णता में पुनर्स्थापित करने के लिए अपने अधिकार और शक्ति का उपयोग किया। हम यहाँ देखते हैं कि उसके पास एक अशुद्ध आत्मा को उसकी इच्छा के विरुद्ध मसीह की आज्ञा मानने के लिए मजबूर करने और वश में किए गए व्यक्ति को छोड़ने का अधिकार था।

लेकिन विरोधी को हराने की मसीहा की इच्छा उन पुरुषों और महिलाओं को ठीक करने की उनकी इच्छा से अधिक मजबूत नहीं है जो पाप के बंधन में हैं। हमारे कमज़ोर दिल हमारी सांसारिक सोच से जुड़े हुए हैं; वे उसके नये जीवन का विरोध करते हैं। पश्चाताप के माध्यम से, अपने जीवन में पाप से दूर होकर और प्रभु की ओर मुड़कर, हम भी पूर्णता का अनुभव कर सकते हैं। अशुद्ध आत्मा वाले व्यक्ति की तरह, हम यीशु पर भरोसा कर सकते हैं कि वह हमारे दिल और दिमाग को शुद्ध करेगा और हमें नए जीवन से भर देगा। आज, आइए स्पष्ट करें कि पवित्र आत्मा के माध्यम से, परमेश्वर हमारे बीच और हमारे भीतर मौजूद हैं और हम उनसे मिल सकते हैं जब हम प्रार्थना में अपने दिल को उनकी ओर मोड़ते हैं जब हम चिल्लाते हैं, अब्बा, पिता। आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं (रोमियों ८:१५बी-१६)।

प्रभु यीशु, हमारे मन और हृदय को अपनी शक्ति और अधिकार के लिए खोल दें। हम उन हितों को अस्वीकार करते हैं जो हमें आपसे दूर ले जाते हैं और आपसे हमारे मन को नवीनीकृत करने और आपके प्रति हमारे प्यार को पुनर्जीवित करने के लिए कहते हैं। आमीन.